

मुकम्मल

लमाज

(मअ) छः नम्बर



मुकम्मल नमाज़



﴿ मअ ﴾

(छः नम्बर)



फिहरिस्ते उन्वान

उन्वान	स०न०	उन्वान	स०न०
छः नम्बर	5	सहाबी किसको....	16
ईमान	5	ताबई किसको..	17
नमाज	6	मुनाफिक किसको..	18
इल्म	8	फासिक किसको....	18
जिक्र	9	ईमान किसको.....	18
इकरामे मुस्लिम	10	हदीस किसको.....	18
तफरीगे वक्त	11	छः कलिमे	19
फर्ज किसको.....	12	दर्ज जैल चीजों.....	21
वाजिब किसको...	13	फराइज वुजू चार हैं	21
सुन्नत किसको....	14	सुनने वुजू	21
सुन्नते मुअक्कदा	14	मुस्तहिब्बाते वुजू	22
सुन्नते गैर मुअक्कदा	15	आदाबे वुजू	22
मुस्तहब या नफिल	15	मकरूहाते वुजू	23
अदब	15	वुजू को तोड़ने.....	23
हराम किसको	16	फराइजे गुस्ल	24
मकरूहे तहरीमी	16	सुनने गुस्ल	24
मकरूहे तनजीही	16		

फ़िहरिस्ते उन्वान

उन्वान	स०न०	उन्वान	स०न०
मकरूहाते गुसल	24	सूरतुल काफिरून	31
फराइजे तयम्मूम	25	सूरतुन्नस	32
सुनने तयम्मूम	25	सूरतुल—लहब	33
वह चीजें जिन पर...	25	सूरतुल इख़्लास	33
नमाज़	26	सूरतुल फ़लक	33
अज़ान	26	सूरतुन्नास	34
अज़ान के बाद....	27	तशहहूद	35
सना	27	दरूद शरीफ़	35
तअव्वुज़	28	दरूद के बाद.....	35
तस्मिया	28	दुआ ए कुनूत	36
सूरतुल फ़ातिहा	28	आयतुल कुर्सी	36
सूरतुल अस	29	तरावीह की दुआ	37
सूरतुल फ़ील	29	शुरूते सलात	38
सूरतुल कुरैश	30	अर्काने सलात	38
सूरतुल माउन	30	वाजिबाते सलात	38
सूरतुल कौसर	31	सुनने सलात	40

फिहरिस्ते उन्वान

उन्वान	सं०	उन्वान	सं०
किरअत की सात..	40	दरूद शरीफ	51
रुकू की सुन्नतें	41	बालिग मर्द, औरत	51
सज्दे की सुन्नतें	42	की मैयत की....	
कअदे की सुन्नतें	42	नाबालिग लड़के की	51
औरतों की नमाज़	44	मैयत की दुआ	
मुस्तहिब्बाते नमाज़	45	नाबालिग लड़की	52
नमाज़ को तोड़ने	45	की मैयत की दुआ	
वाली चीजें		मुसाफिर की नामज़	52
मकरूहाते नमाज़	47	खाने के आदाब	52
नमाज़े जनाज़ा में	49	पीने के आदाब	54
दो चीजें फर्ज हैं		सोने के आदाब	54
नमाज़े जनाज़ा में	49	फजाइले, कुरआन	56
चार सुन्नतें हैं		आदाबे तिलावते	56
नमाज़े जनाज़ा के	50	कुरआन पाक	
लिए नीयत करना		सीरत हज़रत स०	57
सना	50	खुलफ़-ए-राशिदीन	63

छः नम्बर

(१) ईमान

नहमदुहु वनुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

अल्लाह तआला का हम पर बहुत बड़ा
एहसान व करम है कि उसने हम सब को
इस्लाम जैसी बड़ी दौलत अता फरमाई।
अल्लाह के यहाँ हर एक मुसलमान और
ईमान वाले की बहुत ज्यादा कीमत और
इज्जत है कि अगर एक ईमान वाला भी
इस दुनिया में बाकी रहेगा तो अल्लाह
तआला इस दुनिया के निजाम को चलाते
रहेगे। और सब से कम दर्जे के मुसलमान
और ईमान वाले को भी जो ज़रूरी बराबर भी
इस दुनिया से ईमान को बचाकर ले जायेगा
अल्लाह तआला इस दुनिया से दस गुनी
बड़ी जन्नत देंगे। इसलिए मुसलमान होना
और ईमान का रखना बहुत ही कीमती चीज़
है। और ईमान यह है कि कलिमा "ला
इलाहा इलल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

पढ़ा जाए और यह यकीन किया जाये कि जो कुछ भी होता है वो अल्लाह तआला करते हैं, और अल्लाह तआला के अलावा कोई कुछ नहीं कर सकता। और हज़रत मुहम्मद (स०) अल्लाह के रसूल हैं। आपने जो बातें बताई हैं वह बिल्कुल सच्ची हैं। और आप ही के तरीकों पर चलने में कामियाबी है।

(२) नमाज़

कलमा—ए—तैयबा का इक़रार कर लेने के बाद बन्दे के जिम्मे खुदा के अहकाम का पूरा करना फर्ज हो जाता है। उन अहकाम में पहला हुक्म “नमाज़” है जिसके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने फ़रमाया “सल्लू कमा रएतुमूनी उसल्ली” नमाज़ हर बालिग़ मर्द व औरत, रात दिन में पाँच वक़्त फर्ज है। जो बन्दे कलिमा तैयबा के इक़रार के बाद नमाज़ की पाबन्दी करते हैं वह इस इक़रार को अपने अमल से पूरा करते हैं जो कलिमा में किया था।

और जो लोग नमाज़ की पाबन्दी नहीं करते चूँकि वह अपने गुलामी के इकरार को अपने अमल से झूठा कर दिखाते हैं इसलिए उनके मुतअल्लिक हज़रत रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम ने फ़रमाया है कि जिसने नमाज़ छोड़ दी उसने कुफ़्र का काम किया और यह भी फ़रमाया है कि नमाज़ छोड़ने वाला कियामत के दिन कारून और फिरऔन और हामान और उब्बई बिन ख़लफ़ के साथ होगा। कलिमा के बाद नमाज़ सब आमाज़ में अफ़ज़ल है। और हदीस में आया है कि कियामत के दिन सब से पहले नमाज़ ही का हिसाब लिया जायेगा। अगर नमाज़ ठीक निकली तो कामियाब और बामुराद होगा। वरना आख़िरत की नेमतों से महरूम होगा और बड़े टूटे और घाटे में होगा। इसलिए नमाज़ को हमेशा ख़ूब पाबन्दी से ठीक वक़्त पर अच्छी तरह वजू करके और दिल लगाकर पढ़ना चाहिये।

(३) इल्म

अल्लाह तआला को वही इल्म पसन्द है जो बन्दे को खुदा तक पहुँचाये और खुदा के अहकाम पर चलाये। दीन का इतना इल्म हासिल कर ले जिस में अपना दीन दुरूस्त हो सके। हर मुसलमान पर फर्ज है। जब बन्दा ने अल्लाह की गुलामी का इकरार कर लिया और दिल में अल्लाह के हुक्म पर चलने का पक्का इरादा कर लिया तो अब बन्दा के जिम्मे ज़रूरी है कि खुदा के हुक्मों को मालूम करे और इबादत के तरीके दरयाफ्त कर ले। नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, आपस के मामलात, रहन सहन, खाने पीने, उठने बैठने, सोने जागने और उनके अलावा दूसरी चीज़ों के अहकाम मालूम कर ले और कम से कम उन अहकाम को तो ज़रूर ही मालूम करे जिन पर अमल न करने से बड़े बड़े गुनाह हो जाते हैं। और मालूम करके अमल भी करे क्योंकि हदीस शरीफ़ में आया है कि बिला शुबहः कियामत के

दिन सब से ज़्यादा सग़्त अज़ाब वालों में दीन का वह जानने वाला भी होगा जिसने अपने इल्म से फ़ायदा न उठाया।

(४) ज़िक्र

ज़िक्र का आला दर्जा यह है कि हर वक़्त अल्लाह की तरफ़ ध्यान रहे और उसकी याद में दिल लगा रहे। ज़्यादा मशक़ करने में और जुबान के अल्लाह की याद में लगा रहने से यह दर्जा हासिल हो जाता है। जिन बन्दों ने ज़िक्र का फ़ायदा और उसकी बरकतें समझ ली हैं वह अपनी उम्र का ज़रासा भी हिस्सा खुदा की याद से ख़ाली नहीं जाने देते हैं। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी को नसीहत फ़रमाई थी कि हर वक़्त तेरी जुबान अल्लाह की याद में तर रहे। और आप ने यह भी फ़रमाया है कि जब कुछ लोग किसी जगह बैठें और वहाँ से अल्लाह का ज़िक्र किये बग़ैर उठ गये तो यह समझ लो कि गोया वह मुर्दार गधे की लाश को खाते उठे और

यह मज्लिस उनके लिए आखिरत में हसरत का सबब बनेगी।

इकरामे मुस्लिमः— रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि वह शख्स हम में से नहीं है जो हमारे बुजुर्गों की ताजीम न करे और हमारे छोटों पर शफकत न करे और हमारे इल्म दीन रखने वालों की कदर न पहचाने और हदीस में यह भी आया है कि तीन शख्सों की तौहीन मुनाफिक ही करेगा। अव्वल बूढ़ा मुसलमान, दूसरा आलिम, तीसरा मुसलामनों का मुन्सिफ बादशाह। मोमिन की शान यह है कि हर मखालूक का ध्यान रखे और तवाजुअ के साथ पेश आये। जो अपने लिए पसन्द करे वही सब के लिए पसन्द करे। न किसी से बुगज रखे और न हसद को दिल में जगह दे। न अपने को बड़ा समझे। सब के साथ अच्छे अखलाक से पेश आये। मुसलमान को खुद सलाम करे। कोई सताये तो माफ करदे।

इख़लास नियतः— जो भी नेक काम करना है वह सिर्फ़ अल्लाह तआला को राजी करने के लिए करना है। अगर किसी दिखावे के लिए कोई काम किया जायेगा तो सवाब नहीं मिलेगा और अमल बेकार होगा।

तफ़रीग़ वक़्तः— तफ़रीग़ वक़्त का लफ़्ज़ी तर्जुमा “वक़्त का ख़ाली करना” है इसका मतलब यह है कि दुनिया के मशग़लों और फ़ना हो जाने वाली ज़िन्दगी के धंधों को छोड़ कर ज़िन्दगी का बहुत बड़ा हिस्सा महज़ रज़ाये इलाही के लिए ख़र्च किया जाये और अल्लाह के अहकाम को दूसरों तक पहुँचाने के लिए घर बार छोड़ कर खुद अपना ईमान क़बी करें। ज़िन्दगी के इस हिस्से में पिछले पाँच नम्बरों की हकीकतों और तकाज़ों को समझने और उन पर अमल करने की मशक़ की जाये। क्योंकि तजुर्बे से यह बात साबित है कि घर रहते हुये इस्लामी अहकाम का सीखना और सिखाना और आख़िरत की फ़िक्र और खुदा

का खौफ दिल में पैदा हो जाना और सही इस्लामी जिन्दगी हासिल हो जाना खुसूसन हमारे इस ज़माने में बहुत दुशवार है। इसलिए ज़रूरत है कि दुनिया के मशगलों से आजाद होकर और अल्लाह से तअल्लुक को तोड़ने वाले बंधनों को काट कर घर बार छोड़ा जाये और अल्लाह के उन बन्दों के साथ मिलजुल कर जो खुदा की रज़ा हासिल करने के लिए वतन छोड़ चुकें हों, जमाअती शक़ल में दीनी अहकाम सीखने और सिखाने की मशक़ की जाये और सीखने सिखाने के साथ अल्लाह के बंदों को भी अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाये। जो दुनिया की फ़ानी जिन्दगी पर जान खपा रहे हैं और आखिरत की जिन्दगी को भूल चुके हैं।

फ़र्ज किसको कहते हैं?

फ़र्ज वह इबादत है जो यकीनी दलील से साबित हो। यानी उसके सुबूत में कोई शुबह न हो। फ़र्ज का इन्कार करने वाला काफ़िर

हो जाता है। और बगैर उज्र के छोड़ने वाला फ़ासिक और अज़ाब का मुस्तहिक है।

फ़र्ज की दो किस्में हैं : (१) फ़र्ज ऐन
(२) फ़र्ज किफ़ाया

फ़र्ज ऐन:— उस फ़र्ज को कहते हैं जिसका अदा करना हर शख्स पर ज़रूरी हो और बिला उज्र छोड़ने वाला फ़ासिक और अज़ाब का मुस्तहिक है। और वह गुनाहगार होगा।

फ़र्ज किफ़ाया:— उस फ़र्ज को कहते हैं जो एक दो आदमियों के अदा कर लेने से सब के जिम्मे से उतर जाये। और अगर कोई भी अदा न करे तो सब के सब गुनाहगार होंगे।

वाजिब किसको कहते हैं?

वाजिब वह इबादत है जो जिन्नी दलील से साबित हो। वाजिब का इन्कार करने वाला काफ़िर नहीं होता। हाँ बिला उज्र छोड़ने वाला

फासिक और अज़ाब का मुस्तहिक होगा।

सुन्नत किसको कहते हैं?

सुन्नत उस काम को कहते हैं जिसको रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने या सहाबा—ए—किराम ने किया हो या करने का हुक्म फरमाया हो।

सुन्नत की दो किसमें हैं : (१) सुन्नते मुअक्कदा
(२) सुन्नते गैर मुअक्कदा

सुन्नते मुअक्कदा:— उस काम को कहते हैं जिसे रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमेशा किया हो या फरमाया हो और हमेशा किया गया हो। यानी बगैर उज़्र के कभी न छोड़ा हो। ऐसी सुन्नतों को बगैर उज़्र छोड़ देना गुनाह है और छोड़ने की आदत बना लेना सख्त गुनाह है।

सुन्नते गैर मुअक्कदा:— उस काम को कहते जिसे हजरत रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अक्सर किया हो लेकिन कभी कभी बगैर उज्र के छोड़ भी दिया हो। उन सुन्नतों के करने से मुस्तहब से ज्यादा सवाब है और छोड़ने से गुनाह नहीं।

मुस्तहब या नफल:— उन कामों को कहते हैं जिनको हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने किया हो। लेकिन हमेशा और अक्सर नहीं बल्कि कभी-कभी किया हो या उसकी फज़ीलत शरीअत में साबित हो उनके करने से सवाब है और न करने से अज़ाब नहीं।

आदाब:— वह काम है जिसके करने में सवाब है और उसके छोड़ने में न कोई बुराई है न अज़ाब।

हराम किसको कहते हैं?

हराम वह काम है जिसकी मुमानियत यकीनी दलील से साबित हो और उसका करने वाला फासिक और अजाब का मुस्तहिक होता है और इन्कार करने वाला काफिर होता है।

मकरूहे तहरीमी:— वह काम है जिसकी मुमानियत जिन्नी दलील से साबित हो उसका इन्कार करने वाला काफिर नहीं मगर गुनाह गार है।

मकरूहे तनजीही:— वह काम है जिसको छोड़ने से सबाब है। करने में अजाब तो नहीं मगर एक किस्म की बुराई है।

सहाबी किसको कहते हैं?

वह शख्स जिसने हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से मुसलमान होने की हालत में मुलाकात की हो और

इस्लाम ही पर इन्तकाल हुआ हो।

एक सहाबी के नाम के आगे रजियल्लाह अन्हु लगाना चाहिये और दो सहाबी हों तो उनके नाम के आगे रजियल्लाह तआला अन्हुमा लगाना चाहिये। और उसकी जमा सहाबा आती है। उनके नाम के आगे रजियल्लाहु तआला अन्हुम लगाना चाहिये। और एक औरत है तो उनको सहाबिया कहते हैं उनके नाम के आगे रजियल्लाह तआला अन्हा लगाना चाहिये और अगर दो हैं या दो से ज्यादा हैं तब उनको सहाबियात कहते हैं और उनके नाम के आगे रजियल्लाह तआला अन्हुन्ना लगाना चाहिये।

ताबई किसको कहते हैं?

वह शख्स जिसने किसी सहाबी से मुसलमान होने की हालत में मुलाकात की हो और इस्लाम ही पर उसका इन्तकाल हुआ हो।

मुनाफिक किसको कहते हैं?

वह शख्स जो जुबान से अपने आप को मुसलमान बताता हो और दिल से काफिर हो।

फासिक किसके कहते हैं? गुनाहगार को बुरे काम करने वाले को फासिक कहते हैं।

ईमान किसको कहते हैं?

उन बातों को दिल से मानना जो हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह की तरफ से बताई हैं और उनका जुबान से इक़रार भी करना।

हदीस किसको कहते हैं?

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बातों को हदीस कहते हैं। या इस तरह कहना कि वह कौल और फ़ैल और तक़रीर और हाल जिसकी निस्बत आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ हो नीज़ सहाबा

किराम के कौल व फ़ेल व तकरीर और ताबि के कौल व फ़ेल को भी हदीस कहते हैं। तकरीर से मुराद किसी वाक़ेअ के सामने या इल्म में आने पर ख़ामोश रहना। हाल से मुराद जिस्मानी और अख़लाकी अहवाल है।

छः कलिमे

पहला कलिमा— ला इलाह इल लल्लाह मुहम्मद रसूलुल्लाह।

दूसरा कलिमा— अशहदु अल्ला इला ह इलल्लाह व अशहदु अन्न न सुहम्मदन अब्दुह व रसूलुह।

तीसरा कलिमा— सुब्हानल्लाहि वल हमदलिल्लाहि वला इला ह इललल्लाह वल्लाह अकबर वला हौ ल वला कूब्र त इल्ला बिल्लाहिल अलियिल अजीम।

चौथा कलिमा— ला इला—ह इललल्लाह वहदह ला शरी क लह लहुल मुल्कु व

लहल हम्द यहयी वयुमीतु व ह—व हय्युला
 —यमूत अ—ब—दन अ—ब—दा जुलजलालि
 वल—इकराम बियदिहिल खैर व ह—व अला
 कुल्लि शैइ इन कदीर।

पाँचवा कलिमां— अस्तग फिरुल्ला—ह
 रब्बी मिन कुल्लि जन्बिन अज नब तुह अ—
 म—दन अव—ख—त—अन सिरिन अव अलानि—
 य—तैव व अतूब इलैहि मिनज्जम्बिल्लजी
 ला अअ लम् इन्न—क अन—त अल्लामुल
 ग्युबि व सत्तारुल उयुबि व गप्फा रुज्जूनूबि वला
 हौ—ल वला कुव्व—त इल्ला बिल्लाहिल
 अलिथ्यिल अजीम।

छटा कलिमा— अल्लाहुम्म—म इन्नी
 अउजूबि—क मिन अन उशिर—क बि—क शै
 अँ व—अन अअ लम् बिही व अस
 तगफिरु—क लिमा ला अअ लम् बिही तुस्त
 अन्ह व—त—बरअतु मिनल कुफिर
 वशिर—कि वल—किज्ब वल—गीबति वल
 बिदअति वन्नमी मति वल फवाहिशि
 वलबहतानि वल—मआसी कुल्लिहा व अस

लम्तु व-अकूल ला इला-ह इललल्लाह
मुहमदर्सुल्लल्लाह।

दर्ज जैल चीजों पर ईमान

लाना जरूरी है

(१) अल्ला तआला पर (२) उसके फरिशतों पर (३) अल्लाह तआला कि नाजिल कर्दा किताबों पर (४) उसके रसूलों पर (५) तकदीर के खैर व शर पर (६) बअस बादल मौत।

फराइजे वुजू चार हैं

(१) एक मर्तबा सारे चेहरे को धोना (२) एक एक बार दोनों हाथ कुहनियों समेत धोना (३) एक बार $\frac{1}{4}$ सिर मसह करना (४) एक बान दोनों पाँव टखनों समेत धोना।

सुनने वुजू— (१) वुजू की निय्यत करना (२) बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ना (३) हाथों और पैरों को तीन—तीन बार धोना

(४) मिस्वाक करना या दांतों पर उंगली मलना (५) कुल्ली करना (६) तीन बार नाक में पानी डालना और खूब साफ़ करना (७) दाढ़ी अगर छोटी है तो अंदर तक भिगोना और अगर घनी है तो खिलाल करना (८) हाथों और पैरों को धोते वक्त उंगलियों का खिलाल करना (९) हर हिस्से को तीन बार धोना (१०) तरतीब से वुजू करना (१२) लगातार धोना।

मुस्तहिब्बाते वुजू— (१) सीधी तरफ़ से शुरू करना (२) गर्दन का मसह करना (३) वुजू का काम खुद करना (४) क़िबले की तरफ़ मुंह करके बैठना (५) पाक और ऊँची जगह पर बैठ कर वुजू करना।

आदाबे वुजू— (१) कनकी उंगली भिगोकर कानों के सुराखों में दाखिल करना (२) नमाज़ के वक्त से पहले ही वुजू कर लेना (३) अजूज़ा को धोते वक्त हाथ से मलना (४) ढीली अंगूठी को हिलाना (५) दुनिया की बातें न करना (६) जोर से पानी मुँह पर

न मारना (७) ज़्यादा पानी न बहाना (८) हर हिस्से को धोने के लिए बिस्मिल्ला पढ़ना (१०) वुजू के बाद कलिमा शहादत (अशहदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह व अश—हदु अन्न न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह) पढ़ना (११) वुजू का बचा हुआ पानी थोड़ा सा खड़े होकर पीना (१२) वुजू के बाद दो रकअत तहियतुल वुजू पढ़ना।

मकरूहाते वुजू— (१) नापाक जगह पर वुजू करना (२) सीधे हाथ से नाक साफ करना (३) वुजू में दुनिया की बातें करना (४) वुजू की सुन्नतों को छोड़ना (५) पानी जरूरत से ज़्यादा खर्च करना (६) बिला जरूरत पानी कम इस्तेमाल करना (७) पानी चेहरे पर मारना (८) तीन बार पानी लेकर तीन बार मसह करना।

वुजू को तोड़ने वाली चीज़ें— (१) पेशाब पाखाना करना या उन दोनों रास्तों से किसी और चीज़ का निकलना (२) रीह यानी हवा का निकलना (३) बदन के किसी जगह से

खून या पीप का निकल कर बह जाना (४) मुंह भर के क़य करना (५) लैट कर या सहारा लगाकर सोना (६) बीमारी या और किसी वजह से बेहोश हो जाना (७) मजनू यानी दीवाना हो जाना (८) नमाज़ में खिल खिलाकर हँसना।

फजाईले गुस्ल— (१) कुल्ली करना (२) नाक में पानी डालना (३) तमाम बदन पर पानी बहाना।

सुनने गुस्ल— (१) दोनों हाथ गट्टों तक धोना (२) इस्तिजा करना और जिस जगह बदन पर नजासत लगी हो उसे धोना (३) नापाकी दूर करने की नीयत करना (४) पहले वुजू कर लेना (५) तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाना।

मकरूहाते गुस्ल— (१) ज़रूरत से ज़्यदा पानी बाहाना (२) नंगा होने की हालत में बात करना (३) क़िब्ले की तरफ़ मुंह करना (४) सुन्नतो के इलाफ़ गुस्ल करना।

फराईजे तयम्मुम

- (१) पाकी हासिल करने की नीयत करना
- (२) दोनों हाथ पाक मिट्टी पर मार कर मुंह पर फेरना (३) दोबारा दोनों हाथ मिट्टी पर मार कर दोनों हाथों पर कुहनियों समेत फेरना।

सुनने तयम्मुम

- (१) शुरू में बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ना
- (२) तरतीब से करना (३) पै दर पै करना
- (४) दोनों हाथ मिट्टी पर रख कर आगे की तरफ करना (५) फिर पीछे को करना (६) फिर हाथों को झाड़ना (७) हाथ मिट्टी पर मारते वक्त उंगलियों को खुली रखना।

वह चीजें जिन पर तयम्मुम

किया जा सकता है

- (१) पाक मिट्टी पर (२) रेत पर (३) पत्थर पर (४) चूने पर (५) मिट्टी के कच्चे और

पक्के बर्तनों पर जिन पर रौंगन न किया गया हो (६) कच्ची या पक्की ईंट पर (७) मिट्टी की ईंटों, पत्थरों या चूने की दीवार पर (८) गेरू या मुल्लानी मिट्टी पर।

नमाज़

अज़ान

अल्लाहु अकबर० अल्लाहु अकबर०

अल्लाहु अकबर० अल्लाहु अकबर०

अशहदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह०

अशहदु अल्ला इला ह इल्लल्लाह०

अशहदु अन्न न मुहम्मदर रसूलुल्लाह०

अशहदु अन्न न मुहम्मदर रसूलुल्लाह०

हइ—य अलस्सलाह० हइ—य अलस्सलाह०

हइ—य अलल फ़लाह० हइ—य अलल फ़लाह०

अल्लाहु अकबर० अल्लाहु अकबर०

ला इला ह इल्लल्लाह०

फज्र की अज़ान में 'हइ—य अलल फ़लाह०' के बाद 'अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम० अस्सलातु ख़ैरुम्मिनन्नौम०' का इज़ाफ़ा करें फिर अज़ान के बाकी जुमले अदा करें और नमाज़ के लिए जब खड़े हों तो तकबीरे इक़ामत में अज़ान के अलफ़ज में 'हइ—य अलल फ़लाह०' के बाद 'क़द का मतिस्सलाह० क़द का मतिस्सलाह०' का इज़ाफ़ा करके अज़ान के बाकी जुमले अदा करें।

अज़ान के बाद की दुआ

अल्लाहुम्म म रब्ब ब हाज़िहिद दअवतित्ताम्मति
वस्सलातिल काइमति आति मुहम्म द निल
वसी ल त वल फ़ज़ील त वब असहु
मक़ामम महमू—द निल्लज़ी वअत्तहू इन्न क
ला तुख़्लिफुल मीआद०

सना— सुब्हा न कल्ला हुम्म म व बिहम्दि
क व तबा र कस्मु क व तआला जहु क
वला इला ह ग़ैरुक०

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

سورة الفاتحه : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لَا
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ لَا مَلِكَ يَوْمَ الدِّيْنِ ط اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ط اِهْدِنَا الصِّرَاطَ
الْمُسْتَقِيْمَ لَا صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ لَا
غَيْرَ الْمَفْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّيْنَ ع (اٰمِيْن)

तअव्वुज — अरुजु बिल्लाहि मिनश्शौ
तानिर्रजीम०

तस्मिया — बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

सूरतुल फातिहा — अलहम्दु लिल्लाहि
रब्बिल आलमीन० अर्रहमानिर्रहीम० मालिकि
यौमिद्दीन० इय्या — क नअबुदु व इय्या — क
नस्तईन० इहदिनस्सिरात लमुस्तकीम०

सिरातल्लजी—न अनअम—त अलैहिम०
 गैरिल—मगजूबि अलैहिम वलज्जाल्लीन०
 (आमीन)

سورة العصر : وَالْعَصْرِ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ۝
 إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۝
 وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝

सूरतुल अस्र— वल अस्रि० इन्नल
 इन्सा—न लफी खूस० इल लल्लजी—न
 आमनू व अमिलुस्सालिहाति व—त—वा—सौ
 बिल हक्कि० व—त—व सउ बिस्सब्र०

سورة الفيل : أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ
 بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۝ أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِي
 تَضْلِيلٍ ۝ وَأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۝
 تَرْمِيهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّن سِجِّيلٍ ۝ فَجَعَلَهُمْ
 كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

सूरतुल फील— अलम—त—र कै फ
 फ—अ—ल रब्बु—क बिअस्हाबि फील०
 अलम यज अल कइ दहुम फी तजलील०
 व अर—स—ल अलैहिम तयरन अबाबील०
 तरमीहिम बिहिजा रतिम—मिन —सिज्जील०
 फ—ज—अ लहुम क—अस्फिम मअ—कूल०

سورة القريش : لَا يَلْفُ قُرَيْشٍ لَا الْفِهِمْ رِحْلَةَ
 الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ هَذَا الْبَيْتِ
 الَّذِي أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ لَا وَأَمَنَهُمْ مِنْ خَوْفٍ

सूरतुल कुरैश— लिईलाफि कुरयशि० ईला
 फिहिम रिह लतशिशताइ वस्सैफ० फल
 यअबुदू रब—ब हाजल बैत० अल्लजी
 अत—अ—महुम मिन जूअ० व आ—म—न—
 हुम मिन खौफ०

سورة الماعون : أَرَأَيْتَ الَّذِي يُكَذِّبُ بِالْإِيمَانِ
 فَذَلِكَ الَّذِي يَدْعُ الْيَتِيمَ لَا وَلَا يَحْضُ عَلَى طَعَامِ

الْمُسْكِينِ ط فَوَيْلٌ لِلْمُصَلِّينَ ۝ الَّذِينَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُونَ ۝ لَا الَّذِينَ هُمْ يُرَاءُونَ ۝ لَا يَمْنَعُونَ
الْمَاعُونَ ع

सूरतुल माऊन— अ—र—ऐय्तल्लजी युक्जिब्बु
बिदीन० फ़जा लिक्ल्लजी यदुऊल यतीम०
वला यहुज्जु अला तआमिल मिसकीन० फ़ वै
—लुल लिल मुसल्लीन० अल्लजी—न हुम अन
सलातिहिम साहून० अल्लजी न हुम युरा ऊन०
व यम नऊनल माऊन०

سورة الكوثر : إِنَّا أَعْطَيْنَكَ الْكَوْثَرَ ط فَصَلِّ
لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ط إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ع

सूरतुल कौसर— इन्न ना आतैना कल
कौसर० फ़सल्लि लि—रब्बि—क वन्हर०
इन्न—न शानि—अ—क हुवल अबतर०

سورة الكافرون : قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ لَا لَا أَعْبُدُ

مَا تَعْبُدُونَ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتُمْ عِبُدُوا اللَّهَ مَا آغْبُدُوا ۖ وَلَا آتَا
 عَابِدًا مَا عَبَدْتُمْ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتُمْ عِبُدُوا اللَّهَ مَا آغْبُدُوا ۖ
 لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۚ

सूरतुल काफिरून— कुल या ऐयुहल
 काफिरून० ला अअ बुदू मा—तअ बुदून०
 वला अन्तुम आबिदू—न मा अअबुद० वला
 अ न आबिदुम माअबत्तुम वला अन्तुम
 आबिदू न मा अअबुद० लकुम दीनुकुम
 वलि—यदीन०

سورة النصر : إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ لَا وَرَأَيْتَ
 النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا لَا فَسَبِّحْ
 بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۚ

सूरतुन्नस्र— इजा जा अ नस्ल्लाहि वल
 फत्ह० व—र—ऐतन्ना—स यद खलू न
 फी—दीनिल्लाहि अफ्वाजा० फ—सब्बिह बिहम्दि
 रब्बि—क वमतग फिर्हु० इन्हू का—न तव्वाबा०

سورة اللهب : تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۖ
 مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۖ سَيَصْلَىٰ نَارًا
 ذَاتَ لَهَبٍ ۖ صِلْ ۚ وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۚ
 فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِّن مَّسَدٍ ۚ

सूरतुल लहब— तब्बत यदा अबी ल
 हबिउ वतब्ब० मा अगना अन्हु मालुहू वमा
 कसब० सयस्ला नारन जा—त लहब०
 वम—र अतुहू हम्म मा ल—तल हतब० फी
 जीदिहा हब्लुम मिम मसद०

سورة الاخلاص: قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۚ اللَّهُ الصَّمَدُ ۚ
 لَمْ يَلِدْ ۚ وَلَمْ يُولَدْ ۚ ۝ وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۚ

सूरतुल इख्लास— कुल हुवल्लाहु अहद०
 अल्लाहुस्समद० लम यलिद० व लम यूलद०
 व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद०

سورة الفلق: قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝ مِن شَرِّ مَا خَلَقَ

لَا وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۖ لَا وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثِ
فِي الْعُقَدِ ۖ لَا وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ۖ

सूरतुल फलक— कुल अऊजु बिरब्बिल
फलक० मिन शरि मा खलक० व—मिन
शरि ग़ासिकिन इजा वकब० वमिन
शरिन—नफ़ासाति फ़िल उकद० वमिन शरि
हासिदिन इजा हसद०

سورة الناس : قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۖ
النَّاسِ ۖ إِلَهِ النَّاسِ ۖ لَا مِن شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۖ
الْخَنَّاسِ ۖ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۖ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۖ

सूरतुन्नास— कुल अऊजु बिरब्बिन्नास०
मलिकिन्नास० इलाहिन्नास० मिन शरिल
वस्वासिल खन्नास० अल्लजी यु वसविसु
फी सुदूरिन्नास० मिनल जिनति वन्नास०

तशहदुद— अत्तहिय्यातु लिल्लाहि वस—
 स— ल—वातु वत्तैयिबाति—अस्सलामु अलै
 क ऐयुहना नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब र
 कातुह अस्सलामु अलैना व. अला
 इबादिल्लाहिस्सालिहिन० अशहदु अल्ला
 इला—ह इललल्लाहु वअश हदु अन—न
 मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुह०

दरूद शरीफ— अल्लाहुम्म म सल्लि
 अला मुहम्मदिव व—अला आलि मुहम्मदिन
 कमा सल्लैत अला इबराहीम० व अला
 आलि इबराही—म इन्न क हमीदुम्मजीद०
 अल्लाहुम्म म बारिक अला मुहम्मदिव व
 अला आलि मुहम्मदिन कमा बारिक त अला
 इबराहीम० व अला आलि इबराहिम इन्न क
 हमीदुम्मजीद०

दरूद शरीफ के बाद की दुआ

अल्लाहुम्म—म इन्नी ज़लमतु नफ़सी जुल
 मन कसीरौ वला यग़ फिरूज्जुनू—ब इल्ला
 अन—त फ़ग़फ़िरली मग़ फ़ि—र—तम मिन

इन्दिक वर हमनी इन्न क अन्तल
गफूरहीम०

दुआ—ए—कुनूत

अल्ला हुम्म म इन्ना नस्तईनु क
वनस्तग—फिरु क व नुअू मिनुबि क व न त
वक्कलु अलै—क व नुस्नी अलै कल खैर०
व नशकुरु क वला नग फुरु क वनखलुउ व
नतरुकु मैयफ जुरुक० अल्लाहुम्म म इय्या
क नअबुदु व ल क नुसल्ली व नस्जुदु व
इलै क नस्आ व नह फिदु व नरजू
रह—म—त—क व नखशा अजा—ब—क इन्न
न अजा—ब—क बिल कुफारि मुल्हक०

آية الكرسي : اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ لَا تَأْخُذُهُ سِنَةٌ وَلَا نَوْمٌ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِنْ عِلْمِهِ إِلَّا

بِمَآشَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا
 يَـُٔوْدُهُ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ

आयतुल कुर्सी— अल्लाहु ला इला—ह
 इल्लाहु वल हैयुल कैयूम० ला तअ खुजुह
 सि—न तुव्वला नौम० लहू माफिस्समावाति
 व माफिल अर्ज० मन जल्लजी यश फउ
 इन्दहू इल्ला बिइजिन० यअलमु मा बै—न
 ऐदीहिम वमा खलफहुम वला युहितु—न बि
 शौइम्मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाअ०
 वसि—अ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल अर्ज०
 वला यउदुहू हिफजुहुमा वहुवल अलीय्युल
 अजीम०

तरावीह की दुआ— सुब्हा—न जिमुल्कि वल
 म—लकूति सुब्हा—न जिल्इज्जति वल अज
 मति वल हयबति वल कुदरति वलकिब्रिया
 इ वल ज—ब रूत० सुब्हानल मलिकिल
 हैयिल्लजी ला यनामु वला यमूत सुब्बुह्न

कुदूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकति वरूह०
अल्ला हुम्म म अजिरना मिनन्नार० या
मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु०

शुरूते सलात— (१) बदन का पाक होना
(२) कपड़ों का पाक होना (३) जगह का
पाक होना (४) सतर का छुपाना (५) नमाज़
का वक़्त होना (६) क़िबले की तरफ़ रुख़
करना (७) नीयत करना।

अक़ानि सलात— (१) तकबीर तहरिमा
कहना (२) खड़ा होना (३) कुरआन मजीद
पढ़ना (४) रुकु करना (५) दोनों सज्दे करना
(६) नमाज़ के आख़िर में अत्तहिyyात पढ़ने
की मिक़दार बैठना।

वाजिबाते सलात— (१) सूरे फ़ातिहा का
पढ़ना यानी फ़र्ज़ नमाज़ों की तीसरी और
चौथी रकअत के अलावा तमाम नमाज़ों की
हर रकअत में सूरे फ़ातिहा का पढ़ना (२)
सूरत का मिलाना (३) फ़र्ज़ की पहली दो
रकअतों को क़िरअत के लिए मुतऐयन

करना (४) सूरे फातिहा को सूरत से पहले पढ़ना (५) अरकान को तरतीब से अदा करना (६) कौमा करना (यानि रूकुअू से उठ कर सीधे खड़े होना) (७) जलसा करना (यानि दोनों सज्दों के दरमियान सीधे बैठना) (८) पहला कअदा करना (यानि तीन और चार रकअत वाली नमाजों में दो रकअतों के बाद तशहहुद की मिकदार बैठना) (९) दोनों कअदों में तशहहुद पढ़ना (१०) तादील अरकान यानी रूकू, सज्दा वगैरा को इत्मिनान से अच्छी तरह अदा करना (११) लफ्जे सलाम से नमाज को खत्म करना (१२) वित्र में दुआ—ए कुनूत के लिए तकबीर कहना और दुआ—ए कुनूत पढ़ना (१३) ईदैन में जायद छः तकबीरें कहना (१४) इमाम को फज्र, मगरिब, इशा, जुमा, ईदैन तयवीह और रमजान के वित्रों में जोर से किरअत करना और जुहर, अस में आहिस्ता पढ़ना।

सुनने सलात

कयाम की ग्यारह सुन्नते— (१) तकबीर तहरीमा के वक़्त सीधा खड़ा होना यानि सर को न झुकाना (२) दोनों पैरों के दरमियान चार उंगली का फ़ासिला रखना और पैरों की उंगलियाँ क़िबले की तरफ़ रखना (३) मुक़तदी की तकबीरे तहरीमा इमाम की तकबीरे तहरीमा के साथ होना (४) तकबीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ कानों तक उठाना (५) हथेलियों को क़िबले की तरफ़ रखना (६) उंगलियों को अपनी हालत पर रखना यानी न ज़्यादा खुली हुई और न ज़्यादा बंद रखना (७) सीधे हाथ की हथेली उल्टे हाथ की पुश्त पर रखना (८) छिंगुली और अंगूठे से हल्का बनाकर गटटे को पकड़ना (९) दरमियानी तीन उंगलियों को कलाई पर रखना (१०) नाफ़ के नीचे हाथ बांधना (११) सना पढ़ना।

किरअत की सात सुन्नते— (१) अऊज़ु बिल्लाह पढ़ना (२) बिस्मिल्लाह पढ़ना (३)

आहिस्ता से आमीन कहना (४) फज्र और जुहर में सूरें हुजरात से सूरें बुरूज तक अस्म और ईशा में अवसाते मुफ़स्सल यानी सूरें बुरूज से सूरें 'लमयकुन' तक पढ़ना (५) फज्र की पहली रकअत को लम्बी करना (६) न ज्यादा लम्बी पढ़ना न ज्यादा ठहर ठहर कर बल्कि दरम्यानी रफ्तार से पढ़ना (७) फ़र्ज की तीसरी और चौथी रकअत में सिर्फ सूरें फ़ातिहा पढ़ना।

रुकू की आठ सुन्नतें— (१) रुकू की तकबीर कहना (२) रुकू में दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ना (३) घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादा रखना (४) पिन्डलियों को सीधा रखना (५) कमर को बिछा देना (६) सर और सुरीन को बराबर रखना (७) रुकू में कम—से—कम तीन बार सुब्हा न रब्बियल अजीम कहना (८) रुकू में उठने में इमाम को समिअल्ला हुलिमन हमिदः और मुकतदियों को रब्बना लकलहम्द और अकेले को दोनों कहना।

सज्दे की बारह सुन्नतें— (१) सज्दे की तकबीर कहना (२) सज्दे में पहले दोनों घुटनों को रखना (३) फिर दोनों हाथों को रखना (४) फिर नाक रखना (५) फिर पेशानी रखना (६) दोनों हाथों के दरमियान सज्दा करना (७) सज्दे में पेट को रानों से अलग रखना (८) पहलुओं को बाजुओं से अलग रखना (९) कुहनियों को ज़मीन से अलग रखना (१०) सज्दे में कम-से-कम तीन बार 'सुब्हा न रब्बियल अज़ल' कहना (११) सज्दे से उठने की तकबीर कहना (१२) सज्दे से उठते हुए पहले पेशानी फिर नाक, फिर हाथ, फिर घुटनों को उठाना और दोनों सज्दों के दरमियान इतमिनान से बैठना।

कअूदे की तेरह सुन्नतें— (१) सीधे पैर को खड़ा रखना और उल्टे पैर को बिछा कर उस पर बैठना और पैर की उंगलियों को क़िबले की तरफ़ रखना (२) दानों हाथों को रानों पर रखना (३) तशहहुद में 'अल्ला

इ लाह' पर शहादत की उंगली उठाना और 'इलल्लाह' पर झुकाना देना (४) कअद—ए आखिरा में दरूद शरीफ पढ़ना (५) दरूद शरीफ के बाद दुआ—ए—मासूरा उन अलफाज में जो कुरआन और हदीस के मुशाबह हों पढ़ना (६) दोनों तरफ सलाम फेरना (७) इमाम सलाम करने की नीयत करे मुक्तदियों को, फरिशतों को और नेक जिन्नातों को (८) सलाम सीधे तरफ पहले फेरना (९) मुक्तदी सलाम करे इमाम को, फरिशतों को, नेक जिन्नातों को और दाएं बाएं मुक्तदियों को (१०) मुनफरिद (वह शख्स जो अकेले नमाज पढ़े) को सिर्फ फरिशतों की नीयत करना (११) मुक्तदी को इमाम के साथ सलाम फेरना (१२) दूसरे सलाम की आवाज को पहले सलाम की आवाज से हल्की करना (१३) मसबूक (वह शख्स जिसकी इमाम के साथ से कुछ

रकअत शुरू में छूट गई हो) को इमाम के फारिग होने का इन्तिजार करना।

औरतों की नमाज़ में फर्क

(१) तकबीरे तहरीमा के वक्त अपने हाथ कन्धे तक उठाये लेकिन हाथों को दुपट्टे से बाहर न निकाले (२) सीने पर हाथ और सीधे हाथ की हथैली को उल्टे हाथ पर सिर्फ रखे (३) रुकू में इतना झुके कि सिर्फ दोनों हाथ घुटनों तक पहुँच जायें और उंगलियों को मिलाकर रखे और दोनों बाजुओं को पहलुओं से मिलाए रखे और दोनों पैरों के टखनों को बिल कुल मिलाकर रखे (४) सज्दे में औरते पाँव न खड़ी करे बल्कि सीधे तरफ़ को निकाल दे और खूब सिमट कर दब कर सज्दा करे के पेट दोनों रानों से और बाहें दोनों पहलुओं से मिली रहें और दोनों बाहों को ज़मीन पर रख दें (५) क़अदे में जब बैठे दोनों पाँव सीधी तरफ़ निकाल ले और दोनों हाथों को रान पर रख ले और उंगलियाँ खूब मिला कर रखे।

मुस्तहिब्बाते नमाज़— (१) तकबीरे तहरिमा के वक्त आस्तीनों से दोनों हथेलियाँ निकाल लेना (२) रुकू और सुजूद में मुन्फरिद (अकेले नमाज़ पढ़ने वाला) का तीन मर्तबा से जायद तस्बीह पढ़ना (३) खड़े होने की हालत में सज्दे की जगह पर और रुकू कदमों के दरमियान जल्से और कअदे में अपनी गोद पर और सलाम के वक्त अपने कन्धों पर नज़र रखना, खाँसी को अपनी ताकत भर न आने देना (५) जामई में मुहँ बंद रखना।

नमाज़ को तोड़ने वाली चीज़ें

(१) नमाज़ में बात करना, जान कर हो या भूल कर थोड़ी हो या ज़्यादा (२) किसी को सलाम करना (३) सलाम का जवाब देना या छींकने वाले को 'यर हमुकल्लाह' कहना या नमाज़ से बाहर वाले किसी शख्स की दुआ पर आमीन कहना (४) किसी बुरी ख़बर पर 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलयहि राजिऊन' पढ़ना या किसी अच्छी ख़बर पर

'अल्हमदुलिल्लाह' कहना या किसी अजीब
 ख़बर पर 'सुब्हानल्लाह' कहना (५) अपने
 इमाम के सिवा किसी दूसरे को लुक़्मा देना
 (६) दर्द या रंज की वजह से आह या उफ़
 कहना (७) कुरआन शरीफ़ देखकर पढ़ना
 (८) कुरआन शरीफ़ पढ़ने में कोई सख़्त
 ग़लती करना (९) अमले कसीर करना यानी
 कोई ऐसा काम करना जिस से देखने वाले
 यह समझें कि यह शख़्स नमाज़ नहीं पढ़
 रहा है (१०) दो सफ़ों की मिक्दार के
 बराबर चलना (११) कोई चीज़ खाना या
 पीना, जान कर या भूल कर (१२) क़िबले
 की तरफ़ से बिला उज़्र सीना फेरना (१३)
 नापाक जगह पर सज्दा करना (१४) सतर
 खुल जाने की हालत में एक रुक़न की
 मिक्दार ठहरना (१५) दुआ में ऐसी चीज़
 मांगना जो इन्सानों से मांगी जाती है (१६)
 दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना
 कि आवाज़ में कोई हर्फ़ ज़ाहिर हो जाये
 (१७) बालिग़ आदमी का नामज़ में कह
 क़हा मार कर या आवाज़ से हँसना (१८)

इमाम से आगे बढ़ जाना वगैरह।

मकरूहाते नमाज

(१) सदल यानी कपड़े को लटकाना (२) कपड़ों को मिट्टी वगैरह से बचाने के लिए हाथ से रोकना या समेटना (३) अपने कपड़ों या बदन से खेलना (४) मामूली कपड़ों में नमाज पढ़ना जिनको पहन कर मजमें में जाना पसन्द नहीं किया जाता (५) मुंह में रुपया या पैसा या कोई और ऐसी चीज़ रख कर नमाज पढ़ना जिस की वजह से किरअत करने से मजबूर न हों और अगर किरअत से मजबूर हो जायें तो नमाज न होगी (६) सुस्ती और बे परवाही की वजह से नंगे सर पढ़ना (७) पाखाना पेशाब की हाजत होने की हालत में नमाज पढ़ना (८) बालों को सर पे जमा करके जुड़ा बांधना (९) कंकरियों को हटाना लेकिन अगर सज्दा करना मुश्किल हो तो एक मर्तबा हटाने में कोई मुज़ायका नहीं (१०) उंगलियां चटखाना या एक हाथ की

उंगलियाँ दूसरे हाथ की उंगलियों में डालना
 (११) कमर या कोख या कूल्हे पर हाथ
 रखना (१२) कुत्ते की तरह बैठना (यानी रानें
 खड़ी करके बैठना और रानों को पेट से
 और घुटनों को सीने से मिला लेना और
 हाथों को ज़मीन पर रख लेना) (१४) मर्द
 का सज्दे में दोनों कलाईयों को ज़मीन पर
 बिछा लेना (१५) ऐसे आदमी की तरफ़
 नमाज़ पढ़ना जो नमाज़ी की तरफ़ मुंह
 करके बैठा हो (१६) हाथ के इशारे से
 सलाम का जवाब देना (१७) बिला उज़्र
 चहारज़ानों (आल्ती—पाल्ती मार कर) बैठना
 (१८) बिला वजह जमाई लेना या रोक
 सकने के बावजूद न रोकना (१९) आँखों
 को बन्द करना लेकिन अगर नमाज़ में दिल
 लगाने की वजह से बन्द करें तो मकरूह
 नहीं (२०) इमाम का मेहराब के अन्दर
 खड़ा होना लेकिन अगर मेहराब के अन्दर
 नहीं तो मकरूह नहीं (२१) अकेले इमाम
 का एक हाथ ऊंची जगह पर खड़ा होना
 और अगर उसके साथ कुछ मुक़तदी भी हो

तो मकरूह नहीं (२२) ऐसी सफ़ के पीछे अकेले खड़ा होना जिसमें जगह खाली हो (२३) किसी जानदार की तस्वीर वाले कपड़े को पहन कर नमाज़ पढ़ना (२४) ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना कि नमाज़ी के सिर के ऊपर या उसके सामने या सीधे उल्टी जानिब या सज्दे की जगह तस्वीर हो (२५) चादर या और कोई कपड़ा उस इस तरह लपेट कर नमाज़ पढ़ना कि जल्दी हाथ बाहर न निकल सके (२७) नमाज़ में अंगड़ाई लेना यानी सुस्ती उतारना (२८) सुन्नत के खिलाफ़ नमाज़ में कोई काम करना।

नमाज़े जनाज़ा में दो चीज़ें फ़र्ज़ हैं

(१) चार तकबीर यानी चार मर्तबा 'अल्लाहु अकबर' कहना (२) क़याम यानी खड़े होकर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना।

नमाज़े जनाज़ा में चार चीज़ें सुन्नत हैं

(१) इमाम का मैयत के सीने के सामने

खड़ा होना (२) पहली तकबीर के बाद सना पढ़ना (३) दूसरी तकबीर के बाद दरूद शरीफ पढ़ना (४) तीसरी तकबीर के बाद मैयत के लिए दुआ पढ़ना।

नमाजे जनाजा के लिए नीयत करना नीयत करता हूँ नमाजे जनाजा की चार तकबीरों के साथ, तारिफ अल्लाह तआला के लिए, दरूद शरीफ हजरत रसूलुल्लाह (स०) के लिए, दुआ इस मैयत के लिए इस इमाम के पीछे (मैं इमाम मुक्तदियों को) मुंह मेरा क़िब्ले की तरफ।

पहली तकबीर— अल्लाहु अकबर०

सना— सुब्हा—न क अल्लाहुम्म—म. व बिहम्दि— क व तबा—र कस्मु—क व—तआला जहु—क व—जल्ला सनाउक वला इला—ह गैरुक०

दूसरी तकबीर— अल्लाहु अकबर०

दरूद शरीफ— अल्ला हुम्म—म सल्ले
 अला मुहम्मदिव व—अला आलि मुहम्मदिन
 कमा सल्लै—त व—सल्लम त बारक—त
 व—रहिम—त व—त—रह हम—त अला
 इबराही—म व—अला आलि इबराही—म
 इन—न—क हमीदुम्मजीद०

तीसरी तकबीर— अल्लाहु अकबर०

बालिग मर्द और औरत
 की मैयत की दुआ

अल्लाहुम्मगफिरलि हय्यिना वमैयतिना
 वशाहिदिना व गाइबिना व सगीरिना व—
 कबीरिना व—ज करिना व उन्साना अल्लाहुम्म
 —मन अह यइ—तहू मिन्ना फ़—अहयिही
 अलल इस्लाम व—मन तवफ़हू अलल
 ईमान०

नाबालिग लड़के की मैयत की दुआ

अल्ला हुम्मज अल्हु लना फ़ र तै वज
 अल्हु लना अजरौं जुखरौं वज अल्हु लना
 शफ़ि औवमुशफ़अ०

नाबालिग लड़की की मैयत की दुआ
 अल्ला हुम्मज अल्हा लना फ--र--ताँ वज
 अल्हा लना अजराँ वजुखराँ वज अल्हा
 लना अज रव्वजुख रंव वज अल्हा लना
 शफिअताँ व--मुशफ्फअः०

चौथी तकबीर— अल्लाहु अकबर०

दाएं और बाएं कहे—

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह०

मुसाफिर नमाज कैसे पढ़े— कस्र और दीगर अहकामे सफर जारी होने के लिए 48 मील $77\frac{1}{4}$ किलोमीटर हो तो कस्र जायज है। कस्र का मतलब यह है कि चार रकअत वाली नमाज को दो रकअत पढ़ना।

खाने के आदाब— (१) दस्तरख्वान बिछाना (२) दोनों हाथ गट्टों तक धोना (३) 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना (४) सीधे हाथ से खाना (५) खाना एक किस्म का हो तो अपने सामने से खाना (६) अगर कोई लुकमा गिर

जाए तो उठाकर साफ करके खाना (७) टेक लगाकर न खाना (८) खाने में कोई ऐब न निकालना (९) खाते वक़्त उकड़ू बैठना या एक घुटना खड़ा हो और दूसरे घुटने को बिछाकर उस पर बैठना या दोनों घुटने ज़मीन पर बिछा कर कअदे की तरह बैठे और आगे कि तरफ़ ज़रा झुक कर बैठे (१०) खाने के बाद बर्तन और उंगलियों को साफ़ कर लेना (११) तीन उंगलियों से खाना (१२) मसिज्द में बैठ कर प्याज़ न खाये और अगर बाहर भी खाए तो बदबू जाने तक मसिज्द में दाख़िल न हों (१३) अगर शुरू में 'बिस्मिल्लाह' पढ़नी भूल जाए तो 'बिस्मिल्लाहि अव्वलहू व आखिरहू०' पढ़ना (१४) खाने के बाद की दुआ पढ़ना 'अल्हमदु लिल्लाहिल्लज़ी अत अ मना व सकाना वज अलना मिनल मुस्लिमीन०'

दूसरी दुआ— अल्हमदुलिल्लाहिल्लज़ी हुव अश बअना व अरवाना व अनअम अलैना व अफज़ल (१५) जब किसी दूसरे के घर

खाना खाएं तो यह दुआ पढ़े 'अल्लाहुम्म म
 अत अम मन अत अमनी वसकि मन
 सकानी०' (१६) दस्तरखवान उठाने की
 'अल्हम्दु लिल्लाहि हमदन कसीरन कसीरन
 तैयबन मुबारकन फीह०' पढ़ना (१७) जब
 मेज़बान के घर से चलें तो यह दुआ पढ़े
 'अल्लाहुम्म बारिक लहुम र जक तहुम
 वग़फ़िर लहुम वरहम हुम०'

पीने के आदाब— (१) सीधे हाथ से पीना
 (२) बैठ कर पीना (३) 'बिस्मिल्लाह' कह
 कर पीना और पी कर 'अल्हम्दुलिल्लाह' कहना
 (४) तीन सांस में पीना (५) बर्तन के टूटे
 हुए किनारे की तरफ़ से न पीना (६) दूध
 पीने के बाद यह दुआ पढ़ना 'अल्ला—
 हुम्म म बारिक लना फीहि वज़िदना मिन्हु'
 (७) ज़म—ज़म का पानी खड़े हो कर पीना
 (८) वुजू से बचा हुआ पानी खड़े होकर पीना।

सोने के आदाब— (१) इशा की नमाज़
 पढ़ कर जल्दी सोने की कोशिश करना (२)
 बावुजू सोना (३) तीन मर्तबा बिस्तर झाड़

लेना (४) सुरमा लगाकर सोना (५) सोने से पहले तस्बीह फातिमा पढ़ लेना '३३ मर्तबा सुब्हानल्लाह, ३३ मर्तबा अल्हम्दु-लिल्लाह और ३४ मर्तबा अल्लाहु अकबर' पढ़ना (६) 'अल्हम्दु शरीफ' पढ़ना, चारों कुल पढ़ना, आयतुल कुर्सी पढ़ना, सूरे मुल्क और अलिफ-लाम-मीम-सज्दा पढ़ना अगर ज्यादा न पढ़ सके तो कम से कम कुरआन शरीफ की दस आयतें ही पढ़ ले (७) सोने से पहले तीन बार 'इस्तिगफार' भी पढ़ना 'असतगफिरुल्लाहल्लजी ला इला-ह इल्ला हुवल हैयुल कैयूम०' (८) सोने की दुआ पढ़ना 'अल्लाहुम्म म बिस्मिक अमूतु व अहया०' (९) सीधी करवट लेट कर सीधा हाथ गाल के नीचे रखकर किब्ले की तरफ मुंह करके सोना (१०) अगर डरावना ख्वाब नजर आए और आँख खुल जाए तो 'अऊजु बिल्लाहि मिनशशैतानिर-रजीम०' तीन बार पढ़कर उल्टी तरफ थूथकार दो और करवट बदल कर सो जाओ (११) सोकर उठे तो यह दुआ पढ़े 'अल्हम्दुलिल्लाहिल्लजी

अह्याना बअ—द मा अमा तना व इलै
हिन्नुशूर०'

फजाइले कुरआन मजीद— (१) क्यामत के दिन पढ़ने वाले की सिफारिश करेगा (२) हर हर्फ पर दस नेकियाँ मिलेंगी (३) साहिबे कुरआन से कहा जाएगा कि कुरआन मजीद पढ़ते जाओ और जन्नत में बलन्द दरजात की तरफ बढ़ते जाओ क्योंकि उसकी मंजिल वहाँ तक है जहाँ तक वह आखिरी आयत की तिलावत करेगा (४) दिल का जंग दूर करेगा (५) कुरआन शरीफ पढ़ने से अल्लाह की मुहब्बत में ज्यादाती होती है (६) अल्लाह से नजदीकी पैदा होती है।

आदाबे तिलावते कुरआन पाक

(१) पाक साफ होना (२) बावुजू होना (३) अदब के साथ बैठना (४) कुरआन शरीफ को रेहल या साफ तकिए पर रखना (५) उसकी तरफ पांव न करना (६) उससे ऊँची जगह न बैठना (७) तअव्वुज और तस्मियः

से शुरू करना (८) कुरआन मजीद पढ़ने के दरमियान बातें न करना (९) अगर बातें करें तो फिर से तअव्वुज पढ़ कर शुरू करना (१०) क्वाइद के मुताबिक ठहर-ठहर कर पढ़ना और अच्छी आवाज़ से पढ़ना।

सीरत हज़रत रसूले पाक

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

हुज़ूरे पाक (स०) नौ रबीउल अव्वल बरोज़ पीर मुताबिक बीस अप्रैल ५७१ ई० को मक्का मुअज्जमा में पैदा हुए। आप (स०) के वालिद का नाम अब्दुल्लाह, वाल्दा का नाम आमिना था। दादा का नाम अब्दुल मुत्तलिब, दादी का नाम फातिमा, नाना का नाम वहब, नानी का बर्रह था। आप के बारह चचा और छः फूफियां थीं। आप के वालिद आप की पैदाइश से दो महीने पहले वफात पा चुके थे। आप की छः साल की उम्र हुई तो वाल्दा का भी इन्तकाल हो गया और फिर परवरिश दादा अब्दुल मुत्तलिब के

सुपुर्द हुई। जब उम्र बारह साल की हुई तो आप के चचा अपने साथ तिजारत के लिए मुल्के शाम की तरफ ले गये, रास्ते में बुहैरा राहिब ने पहचान कर यह नबी आखिरुज्जमा है, वापस करा दिया। पच्चीस साल की उम्र हुई तो हजरात खदीजा की तरफ से उनकी तिजारत के वकील होकर फिर शाम तशरीफ ले गये। वहाँ फिर नस्तूरा राहिब से मुलाकात हुई उसने आपके नबी होने की बशारत दी। इक्तालिसवीं बरस नौ रबीउल अब्बल मुताबिक बारह फरवरी ६१० इ० बरोज पीर को कोहे हिरा में आप को नुबुव्वत मिली और आपने खुदा के हुक्म पर पोशीदा तौर पर मुसलमान बनाना शुरू किया। जो हजरात मुसलमान होते रहे उन्होंने अपना फर्ज महसूस किया और फौरन दूसरों में तबलीग शुरू कर दी। तीन साल के अर्से में तकरीबन तीस आदमी मुसलमान हुए। उसके बाद आप ने खुल्लम खुल्ला तबलीग शुरू कर दी। जिसकी बिना पर मुशिरकों ने मुसलमानों पर जुल्म शुरू कर दिया। परेशानियों

के बढ़ने की वजह से पन्द्रह मुसलमानों ने
 सन् ५ नब्वी को मक्का छोड़ कर हब्शा में
 क्याम फरमाया (यह पहली हिजरत हब्शा
 कहलाती है।) ७ नब्वी में गैरमुस्लिमों ने
 मुसलमानों को बिल्कुल खत्म करने का इरादे
 से आप (स०) को और आप के हिमायतियों
 (साथियों) को शिअबे अबी तालिब में डाल
 कर गोया कैद कर दिया जहाँ तीन साल
 तक रहे। इसी दौरान ७ नब्वी को सौ से
 कुछ ज्यादा मुसलमानों ने हब्शा की दूसरी
 हिजरत की और सन् १० नब्वी को हजरत
 जैद इब्ने हारिस के साथ ताइफ़ का सफ़र
 किया और मेअराज का वाकिआ भी पेश
 आया जिसमें पाँच नमाज़ें फर्ज हुईं। और
 इसी दस नब्वी को मदीना के दो अफ़राद
 सअद (रजि०) और ज़क्वान (रजि०) मुसलमान
 हुए। ११ नब्वी में मदीने के छः अफ़राद,
 १२ नब्वी में चौदह अफ़राद मुसलमान हुए।
 इसी को बैसे उक्बा—ए—ऊला कहते हैं।
 और फिर तेरह नब्वी में तेहत्तर आदमियों ने
 बैत की जिस को बैसे उक्बा—ए—सानिया

कहते हैं। जब आप (स०) को इस बात का पूरा अंदाज़ा हो गया कि मक्के में रहते हुए इस्लाम में कामयाबी मुशिकल है तो आप (स०) अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ शुरू रबीउल अव्वल १४ नब्बी में मक्का छोड़ कर मदीना के लिए खाना हो गये। मक्के से कुछ आगे चलकर सौर पहाड़ की एक ग़ार में तीन दिन क़याम फ़रमाया। चार रबीउल अव्वल पीर के दिन यहाँ से खाना होकर कुबा पहुँचे। यहाँ आपने चौदह दिन क़याम फ़रमाया और एक पहली मसिज्द तामीर की। सत्ताईस रबीउल अव्वल को जुमे कि दिन मदीने में हज़रत अबु अय्यूब अन्सारी (रजि०) के मकान पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए (इसी साल से हिजरी का पहला साल शुरू होता है।)

सन् १ हिजरी में मसिज्दे नब्वी की बुनियाद रखी गई और अज़ान की इब्तादा हुई।

सन् २ हिजरी में रोज़े फ़र्ज हुए, ज़कात फ़र्ज हुई, सदका—ए—फ़ित्र वाजिब हुआ। ईद

बकरईद की नमाज का हुक्म हुआ। और सतरह रमज़ान को जंगे बदर हुई जिसमें तीन सौ तेरह मुसलमान थे जिनके पास कुल दो घोड़े सत्तर ऊँट और चंद तलवारें थीं और काफ़िर तक़रीबन एक हजार थे। उनके पास सौ ऊँट, सौ घोड़े और हर एक के पास हथियार थे। इसके बावजूद अल्लाह तआला ने मुसलमानों को बहुत बड़ी फ़तह दी। इस जंग में चौदह मुसलमान शहीद हुए और सत्तर काफ़िर क़त्ल हुए और सत्तर ही कैद हुए।

सन् ३ हिजरी में शराब हराम हुई। जंगे उहद हुई जिसके अंदर शुरू में एक ग़लती की वजह से शिकस्त हुई उसके फ़ौरन बाद फ़तह हो गई।

सन् ४ हिजरी में बीरे मऊना का वाक़आ पेश आया जिस में सत्तर हुफ़फ़ाज़ें कुरआन शहीद हुए।

सन् ५ हिजरी में पर्दे का हुक्म हुआ। जंगे ख़न्दक हुई और बनी मुस्तलक़ का वाक़आ हुआ।

सन् ६ हिजरी में चौदह सौ सहाबा—ए किराम के साथ सुलह हुदैबिया का वाक्आ हुआ। दुनिया के बादशाहों के पास इस्लाम की दावत के खुतूत भेजे।

सन् ७ हिजरी में ग़ज़ व—ए—खैबर हुआ। उमरा भी अदा किया गया जो हुदैबिया के मौके पर तय हुआ था।

सन् ८ हिजरी में जमादिय्युल अव्वल में जंगे मौता हुई। रमज़ानुल मुबारक में मक्का फ़तह हुआ। जिसमें दस हजार मुसलमान थे। आप. (स०) मक्का में १५ रोज़ क़याम फ़रमाकर वापस तशरीफ़ ले आए और फ़ौरन बाद शव्वाल ही को जंगे हुनैन हुई जिसमें चार मुसलमान शहीद हुए और ७१ काफ़िर क़त्ल हुए। उसके फ़ौरन बाद जंगे ताइफ़ का वाक्आ पेश आया।

सन् ९ हिजरी में माहे रज्जब में तबूक के लिए रावाना हुए। १५ रोज़ वहाँ क़याम फ़रमाया और रमज़ान में मदीना मुनव्वरह वापस पहुँचे।

सन् १० हिजरी में पच्चीस जीकादा हफ्ते के दिन हज के लिए मदीने से खाना हुआ और चार जिलहिज्जा को मक्का मुकर्रमा पहुंचे और तकरीबन सवा लाख सहाबा—ए किराम के साथ हज अदा किया।

सन् ११ हिजरी में २८ सफर मंगल के दिन आप (स०) के सर में दर्द हुआ फिर बुखार हुआ। चौदह रोज आप (स०) बीमार रहे और बारह रबीउल अव्वल बरोज पीर चाशत के वक्त तिरेसठ साल की उम्र पूरी कर आप (स०) अल्लाह से जा मिले और दो दिन के बाद बुध की रात को मदीने ही में दफन किये गये।

खुलफा—ए—राशिदीन

हजरत मुहम्मद (स०) की वफात के बाद हजरत अबू बक्र सिदिक (रजि०) मुसलमानों के खलीफा बने। आप (रजि०) सवा दो

साल खलीफा रहे और तिरेसठ साल की उम्र पूरी फरमाकर बाईस जमादियुस्सानि सन् १३ हिजरी में वफात पाई।

इनके बाद हजरत उमर फारूक (रजि०) खलीफा बने आप (रजि०) साढ़े दस साल खलीफा रहे और ६३ साल की उम्र पूरी फरमा कर सत्ताईस जिल हिज्जा सन् २३ हिजरी मुताबिक सन् ६४४ ई० में वफात पाई।

इनके बाद हजरत उस्मान गनी (रजि०) खलीफा बने आप बारह साल खलीफा रहे और बयासी साल की उम्र पूरी फरमा कर १८ जिल हिज्जा ३५ हिजरी में वफात पाई।

इनके बाद हजरत अली (रजि०) खलीफा बने। आप पौने पाँच साल खलीफा रहे और तिरेसठ साल की उम्र पूरी फरमा कर १७ रमजान सन् ४० हिजरी में वफात पाई।